शिक्षा का उत्थान

शिक्षक का सम्मान

मिशन शिक्षण संवाद

रामायण के पात्र

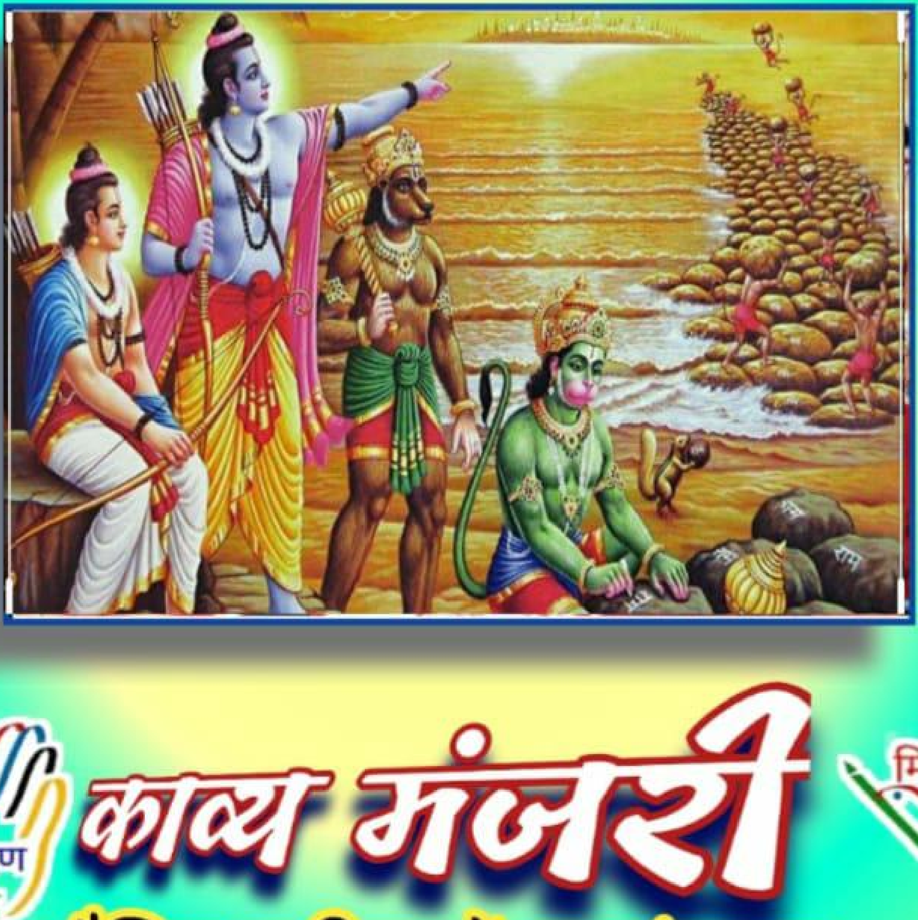

मिशन शिक्षण संवाद

काव्य मंजरी

शैक्षिक कविताओं का संकलन

मिशन शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद

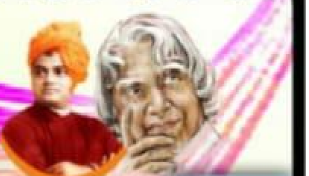

रामायण के पात्र

01

श्री राम

रावण का अहंकार मिटाने,
मर्यादा की सीख सिखाने।
प्रकट हुए थे प्रभु श्री राम,
उनको कोटि-कोटि प्रणाम।।

पिता थे राजा दशरथ,
थी कौशल्या मैया।
भरत, शत्रुघ्न और लक्ष्मण,
इनके प्यारे भैया।।

शिव के महाधनुष को तोड़ा,
सीता जी से नाता जोड़ा।
कैकई ने मांगे वरदान,
भरत को राज्य, वन को राम।।

पथराई अहिल्या को तारा,
अत्याचारी रावण को मारा।
जानकी संग फिर लौटे राम,
उनको है कोटि-कोटि प्रणाम।।

रचना

हेमलता गुप्ता (स० अ०)
प्रा० वि० मुकन्दपुर
लोधा, अलीगढ़

शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

रामायण के पात्र

02

लक्ष्मण

रघुकुल में जन्मे सुमित्रानन्दन,
जग ने किया इनका अभिनन्दन।
आदर्श अनुज का दिया उदाहरण,
राम, सीता संग किया वन गमन।।

शेषनाग के थे ये अवतार,
राम रज से हुआ उद्धार।
उर्मिला संग विवाह रचाया,
अंगद व चन्द्रकेतु पुत्रों को पाया।।

भ्रातृ-सेवा का व्रत लिया था,
संसार सम्बन्धों को गौण किया था।
भ्राता की आज्ञा थी सर्वोपरि,
सहन न किया परशुराम वाक्य भी।।

मेघनाद संग युद्ध किया था,
शक्ति ने मूर्छित कर दिया था।
आदर्श-वैराग्य की प्रतिमूर्ति बन गए,
लक्ष्मण भ्रात-पथ अनुगामी बन गए।।

रचना
दीपिका जैन (स०अ०)
प्रा० वि० बनगवां
सालारपुर, बदायूँ

रामायण के पात्र

03

भरत जी

रघुकुल में जन्मे थे भरत जी,
कैकेयी-दशरथ के लाल।
थे आदर्श रूप भाई का,
प्रस्तुत की आदर्श मिसाल।।

पत्नी जिनकी माण्डवी देवी,
तक्ष-पुष्कल सुत इनके सुजान।
भाई की भक्ति का भरत ने,
प्रस्तुत किया आदर्श महान।।

राम-सिया जब वन को सिधारे,
व्यथित भरत की प्रतिज्ञा भारी।
बनकर व्रती, तपस्वी, साधक,
नन्दिग्राम में उम्र गुजारी।।

बनकर सेवक स्वयं, राम की,
चरण पादुका चौदह वर्ष।
नगरी अयोध्या की सेवा में,
पाया था अनुपम उत्कर्ष।।

रचना
शिखा वर्मा (इं०प्र०अ०)
पू० मा० वि० स्योढ़ा,
बिसवां, सीतापुर

रामायण के पात्र

04

शत्रुघ्न जी

राजा दशरथ के पुत्र चार,
चारों पुत्र थे वीर अपार।
राम बड़े, दूजे भरत लाल,
तीजे लक्ष्मण, चौथे शत्रुघ्न लाल।।

लक्ष्मण के थे जुड़वाँ भाई,
माता थी जिनकी सुमित्रा माई।
प्यार जिन्हें करते थे सब भाई,
भ्रातसेवा में थी उम्र बितायी।।

भार्या थीं जिनकी श्रुतिकीर्ति,
माण्डवी बहन साहसी, सुपुनीत।
दो पुत्र थे सुबाहु व शत्रुघाती,
दोंनो बुद्धिमान वीर प्रतापी।।

नाम शत्रुघ्न करते शत्रु संहार,
वीरता जिनकी थी अपरम्पार।
लवणासुर को मार गिराया,
फिर से मधुपुरी नगर बसाया।।

रचना
सुप्रिया सिंह (स०अ०)
कम्पोजिट स्कूल बनियामऊ
मछरेहटा, सीतापुर।

रामायण के पात्र

सीता

सीता पुत्री जनक की, लव-कुश की थी माई।
छाया थी वो राम की, वन में पीछे आयी।।
वन में पीछे आयी, कि रावण ने चुराया।
ले जा करके उनको, लंका में छुपाया।।
कहत कवयित्री 'कलिका', लंका को था जीता।
लौटे राम अयोध्या, साथ में लेकर सीता।।

सीता बनी थीं राम के, जीवन का आधार।
वही बनीं थी रावण के, पतन का मूलाधार।।
पतन का मूलाधार, बनी थी कोई नारी।
कलयुग में नर ने बनाया, इसे बेचारी।।
कहत कवयित्री 'कलिका' किसने किसको जीता?
राम को फिर से पाकर भी हारी थी सीता।।

रचना-
श्रीमती पूनम गुप्ता "कलिका"
(स०अ०) प्रा० वि० धनीपुर,
धनीपुर, जनपद अलीगढ़

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

रामायण के पात्र

06

उर्मिला

राम के छोटे भाई लखन की भार्या,
जिसने राजा जनक के यहाँ जन्म लिया।
सीता की थी छोटी बहना,
इनकी माँ का नाम था सुनयना।।

चौदह वर्ष के वनवास को,
उसने भी पूरा किया।
वो भी जाना चाहती थी,
पर लक्ष्मण ने मना कर दिया।।

उर्मिला रूपमति, सती थी,
और थी बड़ी पतिव्रता।
अयोध्या में रहकर पुत्रवधू,
होने का कर्तव्य पूरा किया।।

रामायण में उर्मिला के महान,
चरित्र और त्याग की होती है चर्चा।
उर्मिला के पतिव्रत को माना जाता है,
कारण लक्ष्मण की विजय का।।

रचना- रीना कुमारी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना
बागपत, बागपत

रामायण के पात्र

07

माण्डवी

भरत की थी पत्नी,
कुशध्वज की थी बेटी।
चंद्रभागा थी माता रानी,
छोटी बहन थी श्रुतकीर्ति।।

हिन्दू महाकाव्य रामायण की एक पात्र,
माण्डवी नहीं किसी परिचय की मोहताज।
भरत त्यागे राजसी जीवन मात्र,
माण्डवी के सर था काँटों का ताज।।

संयोगिनी हो कर भी रही वियोगनी,
भरत की थी सच्ची अर्धांगिनी।
पति-परायणा, साध्वी नारी का चित्रण,
अनुराग-विराग, आशा-निराशा की संगिनी।।

किस्मत ने बनाया कुलवधू पर,
भोग भोगना अभी बाकी था।
तक्ष और पुष्कल की माँ का,
इम्तहान का जग साक्षी था।।

रचना- नम्रता श्रीवास्तव (प्र०अ०)
प्रा० वि० बड़ेहा स्योंढा
महुआ, बांदा

रामायण के पात्र

श्रुतकीर्ति

हिन्दू महाकाव्य रामायण में,
कुछ गौण पात्र भी आते हैं।
आदर्श जीवन चरित्र होकर भी,
वो कम ही जाने जाते हैं।।

श्रुतकीर्ति थी कुशध्वज की बेटी,
जो थे राजा जनक के भाई।
माण्डवी की थी छोटी बहना,
रानी चन्द्रभागा थीं उसकी माई।।

श्रीराम के अनुज शत्रुघ्न से,
श्रुतकीर्ति का विवाह हुआ।
इनसे शत्रुघाति और सुबाहु,
दो वीर पुत्रों का जन्म हुआ।।

शत्रुघ्न ने राजमहल में रहकर भी,
सादा जीवन व्यतीत किया।
श्रुतकीर्ति ने राजमाताओं की,
सेवा में जीवन समर्पित किया।।

रचना- जितेन्द्र कुमार (स०अ०)
प्रा० वि० धनौरा सिल्वर नगर-1
बागपत, बागपत

रामायण के पात्र

09

दशरथ

अज के पुत्र अयोध्या के राजा,
इक्ष्वाकु कुल में जन्मे महाराजा।
दशरथ नाम से जाने जाते,
शूरवीर, पराक्रमी कहलाते।।

इन्दुमती दशरथ की महतारी,
अयोध्या नगरी लगती प्यारी।
तीन रानियाँ परम सनेही,
कौशल्या, सुमित्रा, कैकेयी।।

इनसे चार पुत्र हुए प्यारे,
जेष्ठ पुत्र प्रभु राम हमारे।
भूल हुई दशरथ से भारी,
हतेउ श्रवण, सुत आज्ञाकारी।।

कैकेयी की जिद के कारण,
राम, सिया, लक्ष्मण थे गए वन।
पुत्र वियोग में प्राण गंवाए,
राजा दशरथ परलोक सिधाए।।

रचना
मन्जू शर्मा (स०अ०)
प्रा०वि० नगला जगराम
सादाबाद, हाथरस

रामायण के पात्र

10

कौशल्या

कौशल्या थीं राम की माता,
थीं अयोध्या की राज्य माता।
परिवार के लिए समर्पण थीं,
आदर्श नारी का वे दर्पण थीं।।

इनकी माता का नाम सुबाला,
समय ने खेला खेल निराला।
जीवन भर दुखों को पिया,
पति परायण जीवन जीया।।

अन्तर्द्वंद मन में चलता रहा,
सबके लिए प्यार पलता रहा।
वात्सल्य की ये महारानी थीं,
प्रेम समर्पण की कहानी थीं।।

कैकेयी, सुमित्रा बहन समान,
भरत, लक्ष्मण थे राम समान।
दया, ममता, तप और त्याग,
थीं सच्चे जीवन का अनुराग।।

रचना
भुवन प्रकाश (इं०प्र०अ०)
प्रा० वि० पिपरी नवीन
मिश्रिख, सीतापुर

रामायण के पात्र

11

सुमित्रा

राजा दशरथ की छोटी रानी,
लक्ष्मण और शत्रुघ्न की माता।
सुमित्रा को कौशल्या, कैकेयी ने,
पुत्रेष्टि-यज्ञ से प्राप्त चरू बाँटा।।

प्रखर, प्रभावी, संघर्षमयी,
श्रीराम से विशेष स्नेह रहा।
वनगमन आज्ञा दी लक्ष्मण को,
जहाँ राम वहीं अयोध्या कहा।।

राग, द्वेष, ईर्ष्या, मद से रह दूर,
विवेकपूर्ण कार्य पुत्रों को सिखाया।
मन, वचन, कर्म से भाई की सेवा में,
लीन रहना ही धर्म लक्ष्मण को बताया।।

आदर्श माँ रुप में अनुकरणीय,
राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न प्रिय।
है नमन उन्हें इतिहास बताता,
उनकी महिमा सदैव अकथनीय।।

रचना- डॉ० अनीता मुद्गल (प्र०अ०)
श्रद्धानन्द प्रा० पाठशाला, झींगुरपुरा
नगरक्षेत्र- मथुरा, मथुरा

रामायण के पात्र

12

कैकेयी

राजा दशरथ के थी तीन रानियाँ,
बड़े प्रेम से महल में रहती रानियाँ।
कैकेयी थी राजा की दूसरी रानी,
स्नेह और मेधा की मिशाल थी रानी।।

कैकय देश के राजा की वह पुत्री थी,
देवासुर संग्राम में बनी सारथी राजा की थी।
मांगो दो वरदान तब राजा ने बात कही थी,
निष्ठुर, विमाता का रूप दिखाया वह कैकेयी थी।

एक दिन रानी जब बहकावे में आ गयी,
किया अनर्थ और कोपभवन में चली गयी।
राम के राज तिलक की थी जब तैयारी,
कैकेयी ने आ कर तब पूरी बात बिगाड़ी।।

राजा दशरथ से माँगे वरदान दो,
भरत को राजगद्दी, राम को चौदह वर्ष वनवास हो।
तब भरत ने अपनी माई को धिक्कारा,
कलंकित कहेगा तुझको माता जग सारा।।

रचना- प्रतिमा उमराव (स०अ०)
उच्च प्रा०वि० (संविलियन 1-8)
अमौली, अमौली, फतेहपुर

रामायण के पात्र

13

हनुमान जी

शिव जी के ग्यारहवें रुद्रावतार थे,
बलवान और थे बुद्धिमान।
थी अनन्त शक्तियाँ समाहित,
अंजनी पुत्र थे हनुमान।।

महावीर बजरंगबली
और पवन पुत्र थे नाम
श्री राम जी के भक्त थे
किए थे अद्भुत काम।।

लंका में आग लगा दी थी,
था किया राक्षसों का मर्दन
वीभत्स रूप था दिखा दिया,
थे ऐसे वीर मारुतनन्दन।।

उड़ने की शक्ति उनमें थी,
लक्ष्मन के प्राण बचाए थे।
संजीवनी समझ जब आयी नहीं,
तब उठा पहाड़ी लाए थे।।

रचना
अनुपम वर्मा (स०अ०)
क० उ० प्रा० वि० बहादुरपुर
बंकी, बाराबंकी

रामायण के पात्र

14

सुग्रीव

रामायण महाकाव्य का,
प्रमुख पात्र है सुग्रीव।
वानरराज रामभक्त वो,
बाली अनुज है सुग्रीव।।

सीता खोज में राम पहुँचे,
ऋृष्यमूक पर्वत लक्ष्मण संग।
करायी मित्रता श्री राम की,
श्री हनुमान ने सुग्रीव संग।।

समझ कर पीड़ा सुग्रीव की,
बाली वध राम ने किया।
किष्किन्धा नरेश सुग्रीव को,
धन -स्त्री से भी निर्भय किया।।

सच्चे मित्र धर्म का फर्ज निभा कर,
सीता खोज में वानर सेना लगाये।
रणभूमि में शौर्य का प्रदर्शन कर,
सूर्य पुत्र सुग्रीव बलशाली कहलाये।।

रचना
अनुप्रिया यादव (स॰अ॰)
कम्पोजिट विद्यालय काजीखेड़ा
खजुहा फतेहपुर

रामायण के पात्र

15

अंगद

अंगद थे एक वानर शक्तिशाली,
तारा इनकी माता, पिता वीर बाली।
रावण हरण कर ले गया सीता को,
राम जी ने शांति दूत बना भेजा अंगद को।।

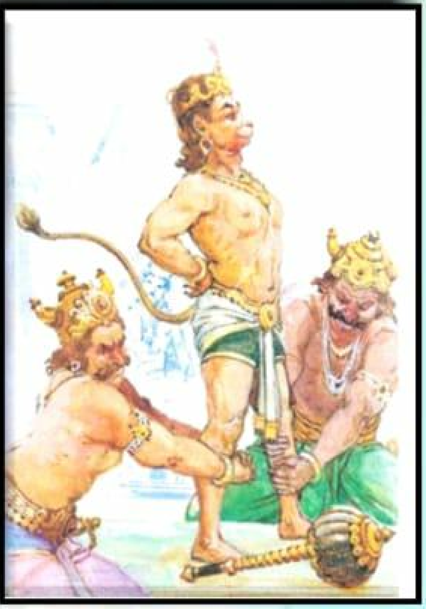

अंगद ने रावण को ललकार पैर जमाया,
हिम्मत है तो इसे हिलाओ या हार मनाओ।
एक-एक योद्धा बल खूब लगाएँ,
लेकिन पग को एक ना हिला पाएँ।।

दम्भ राक्षसों का मिट्टी में मिला दिया,
रावण के पुत्र मेघनाद को हरा दिया।
रावण को आता देख पैर को हटा दिया,
श्रीराम जी की शरण पड़ो यही मार्ग सुझा दिया।।

प्रण हुआ अंगद का सफल,
भय से रावण हुआ व्याकुल।
मर्दन कर शत्रु का बल,
भरा नेत्रों में आनन्द अश्रुओं का जल।।

रचना
स्मृति परमार (स०अ०)
प्रा० वि० मामूरगंज
कादरचौक, बदायूँ

रामायण के पात्र

16

नल

विश्वकर्मा का ले अवतार,
चंचल था जिसका स्वभाव।
वास्तु शिल्प का भरपूर था ज्ञान,
ऐसे वानर बालक का नल था नाम।।

चंचलता से जिसने,
ऋषि-मुनियों को सताया।
देव मूर्तियों को सरोवर में बहाया,
ऋषि यों ने तंग होकर एक कदम उठाया।।

नल की फेंकी कोई वस्तु ना डूबे,
सरोवर में, ऐसा श्राप लगाया।
आगे चलकर यही श्राप वरदान में बदला,
राम की सेवा करने को नल आगे आया।।

वानर सेना की मदद से नल ने,
राम नाम लिखे पत्थरों से समुद्र पर सेतु बनाया।
युद्ध में राक्षसों को मार नल ने,
विजय का परचम लहराया।।

रचना- रीना रानी (स०अ०)
प्रा० वि० सरूरपुर कला- 2
बागपत, बागपत

रामायण के पात्र

17

नील

नल-नील पात्र रामायण के,
उनकी गाथा आज सुनाते हैं।
अतिशय महान जो ज्ञानवान,
उनकी कुछ बात बताते हैं।।

जब सीता माँ का हरण हुआ,
फिर श्रीराम ने खोज करायी।
उदधि पार लंका नगरी में,
कैद की गयी थी सीता माई।।

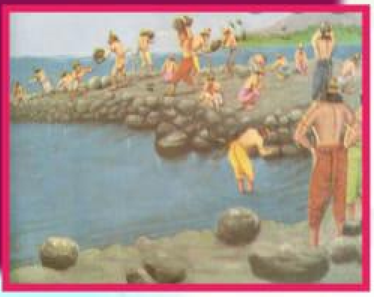

राम की सेना पार चली जब,
आगे जलनिधि अथाह आया।
प्रक्षेपित कर जल में पत्थर,
नील बन्धुओं ने सेतु बनाया।।

देवों के शिल्पी विश्वकर्मा थे,
उनके ही सुत नील कहाते हैं।
अभियन्ता जो सेतुबन्ध के हैं,
हम उनका वृतान्त बताते हैं।।

रचना
सतीश चन्द्र (प्र०अ०)
क० वि० अकबापुर
पहला, सीतापुर

रामायण के पात्र

18

जामवन्त

रामायण के प्रमुख पात्र,
वानर सेना के सलाहकार।
ऋक्ष जाति के थे नायक,
जामवन्त बने परम सहायक।।

ब्रह्मा जी से हुआ था जन्म,
जयवन्ती पत्नी का नाम।
पुत्री जामवन्ती के साथ,
श्रीकृष्ण का हुआ विवाह।।

माता अंजना ने माना भ्राता,
जामवन्त बने भाग्य विधाता।
शिवांश हनुमान के मामा,
राम की सेना के सुखधामा।।

सुग्रीव बाली का हो युद्ध,
या श्रीकृष्ण के साथ हो युद्ध।
रावण मृत्यु का राज बताया,
युवावस्था में वामन बन आया।।

रचना
सुमन पांडेय(प्र०अ०)
प्रा०वि०टिकरी मनौटी, खजुहा, फतेहपुर

रामायण के पात्र

19

जनक

राजा जनक बड़े बलशाली,
राजधर्म की करते रखवाली।
मिथिला का उन्होंने यश बढ़ाया,
सूर्यवंश को चार चाँद लगाया।।

रानी विदेही थी उनको प्यारी,
लेकिन औलाद सुख से थी दुखहारी।
राजा जनक की देख परेशानी,
भगवान ने उनको एक कन्या अवतारी।।

सीता माता थी अवतार,
राजा जनक को था इसका भान।
एक हाथ शिव त्रिशूल उठाया,
अन्त मे स्वयंवर में राजा राम को पाया।।

उर्मिला भी थी उनकी प्यारी,
वो थी लखन जी को वारी।
दोनों बेटियों ने बढ़ाया कुल का मान,
जनक जी को बनाया और महान।।

रचना-
अंजली मिश्रा (स.अ.)
प्राथमिक विद्यालय असनी 1
भिटौरा, फतेहपुर

रामायण के पात्र

सुनयना

धर्म परायण, सरल, साध्वी,
राजा जनक की अर्धांगिनी।
मिथिला की महारानी सुनयना,
दयावान और उदार हृदय की।।

पति संग धरती हल से जोती,
खत्म हुआ भीषण अकाल।
सीता प्राप्त हुई धरती से,
पुत्री पा माँ हुई निहाल।।

सीता संग उर्मिला की माता,
जन्म जिसे दिया रानी ने।
श्रेष्ठ गुणों से युक्त किया था,
पुत्रियों को महारानी ने।।

वाल्मीकि रामायण में,
रानी का नहीं कोई वर्णन।
तुलसी की रामायण में,
माता सीता की माता का वर्णन।।

रचना - सीमा मिश्रा (स०अ०)
कंपोजिट विद्यालय काजीखेड़ा
खजुहा, फतेहपुर

रामायण के पात्र

बाली

किष्किन्धा का राजा बाली,
योद्धा था अतुलित बलशाली।
ब्रह्मा जी का वर था उसको,
रण में तू जीतेगा सबको।।

एक दिन रावण लड़ने आया,
झपट काँख में उसे दबाया।
छः महीने संग लेकर घूमा,
बाली अपने मद में झूमा।।

सुग्रीव उसका छोटा भाई,
उससे भी की खूब लड़ाई।
किष्किन्धा से मार भगाया,
जी भर उसको खूब सताया।।

फिर वन में आए श्री राम,
सुग्रीव के बनाने बिगड़े काम।
एक बाण से बाली मारा,
अंगद को फिर दिया सहारा।।

रचना- ब्रजराज सारस्वत (स०अ०)
संवि० पूर्व मा० विद्यालय- गोपालगढ़
विकास खण्ड व जनपद- मथुरा

रामायण के पात्र

22

रावण

रावण रामायण का एक प्रमुख प्रति चरित्र है,
लंका के साथ राक्षसों का राजा वह विचित्र है।
दस सरों से युक्त उसने बीस हाथों को पाया है,
रावण के साथ ही वह दशानन कहलाया है।।

रामायण नामक कृति के राम नायक हैं,
तो रावण सशक्त व क्रूर खलनायक है।
दशरथ नन्दन राम रावण का वध करेंगे,
राजा अरण्य का रावण को यही शाप है।।

शिव भक्त व विद्वानता उसका गुण है,
तो अधर्मी होना उसका मुख्य अवगुण है।
शब्दों को रखना विद्वानता नहीं है,
ज्ञान जीवन में उतारे वही विद्वान है।।

रावण ने अहम एवं श्रेष्ठ साबित करने,
को सीता का अपहरण किया है।
क्रूरता, आतंक व सदा सताने वाला,
इसने अहंकार व क्रोध का परिचय दिया है।।

रचना- गुलफ्शाँ (स०अ०)
प्रा० वि० केवटरा बेंता
देवमई, फतेहपुर

रामायण के पात्र

23

कुम्भकर्ण

ऋषि विश्रवा पिता व कैकसी,
कुम्भकर्ण की थी माई।
लंकापति रावण से छोटा,
विभीषण का बड़ा भाई।।

अनेक नगरों का भोजन,
अकेले कर जाता था।
विशाल शरीर था उसका,
सोना उसे भाता था।।

तपस्या करके उसने ब्रह्मा को,
मना लिया वरदान के लिए।
इन्द्रासन की जगह निद्रासन,
मांग बैठा वह खुद के लिए।।

युद्ध में भयानक वीरता दिखायी,
वानर सेना थी थर्रायी।
रामजी ने अंत किया उसका,
माना उसने प्रभु की प्रभुताई।।

रचना-
आकांक्षा मिश्रा (स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय सिकन्दरपुर
सुरसा, हरदोई

रामायण के पात्र

24

विभीषण

दानव जाति में जन्म लिया,
नहीं दानव जैसा काम किया।
धर्म पथ पर हमेशा चल,
ब्रह्मा जी से वरदान लिया।।

रावण के सबसे छोटे,
भाई विभीषण कहलाए।
सोच पवित्र थी इनकी,
इसीलिए राम भक्त बन पाए।।

माता सीता का हरण गलत है,
जब रावण को समझाया था।
राज्य से निष्कासित कर रावण,
ने ठोकर मार गिराया था।।

हुआ युद्ध राम, रावण का,
अनेक रहस्य बताए थे।
विजयी हुए राम जी तो,
लंकापति विभीषण बनाए थे।।

रचना- शहनाज़ बानो (स०अ०)
पू० मा० वि० भौंरी-1
मानिकपुर, चित्रकूट

शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

रामायण के पात्र

25

मेघनाद

रावण का पुत्र मेघनाद या,
इन्द्रजीत जिसका था नाम।
वीरों सा पराक्रम था उसका,
अद्भुत था उसका काम।।

इन्द्र को जीत लिया था उसने,
नाम इन्द्रजीत कहाया।
गर्जना उसकी मेघ के जैसे,
इसी से मेघनाद कहलाया।।

लक्ष्मण को शक्ति मारी,
हनुमान ने था बचाया।
राम-लखन को नागपाश में,
उसने देखो बँधाया।।

पिता के भांति उसने भी,
युद्ध में चतुर पराक्रम दिखाया।
अंत मे वीर लक्ष्मण जी ने
मेघनाद को मार गिराया।।

रचना-
सुधांशु श्रीवास्तव (स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय मणिपुर
ऐरायां, फ़तेहपुर

रामायण के पात्र

26

मन्दोदरी

पंचकन्याओं मे से एक थी चिरकुमारी,
अप्सरा रम्भा और मयदानव की पुत्री।
रामायण के यादगार पात्रों मे से एक है,
ये है लंका की पटरानी मन्दोदरी।।

मन्दोदरी और रावण के तीन पुत्र हुए,
अक्षय कुमार, मेघनाद और अतिकाय।
बहुत ही रूपमती और सती थी ये,
ये जानती थी नीति, धर्म और न्याय।।

जब रावण से विवाह तय किया गया,
मयदानव ने उपहार स्वरूप लंका निर्माण किया।
मन्दोदरी ने सीता हरण के बारे में जानकर,
रावण को समझाने का बहुत प्रयास किया।।

मन्दोदरी की रावण ने एक न सुनी,
रावण-राम का भयंकर युद्ध हुआ।
श्री राम ने जीता यह धर्म युद्ध,
और इसमें रावण का वध हुआ।।

रचना- ज्योति सागर (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना
बागपत, बागपत

रामायण के पात्र

27

पतिव्रता तेजस्वी नारी सदा,
सदविचार रखती सुलोचना।
रामायण युद्ध में लक्ष्मण के हाथों,
वीर गति पाया पति सुलोचना।।

सुलोचना

युद्ध से पहले दाँयी भुजा,
गिरी गोदी पर सुलोचना।
कटी भुजा से लिखवाया,
कि भुजा है उसके पति सुलोचना।।

यह सुनकर सभी जन लगे हँसने,
सतीत्व का दिया वास्ता सुलोचना।
सिर लगा जोर से हँसने,
ऐसी पतिव्रता नारी भारत में जन्मी सुलोचना।।

कटा सिर श्री राम से लेकर,
राजभवन पहुँची सुलोचना।
हो गयी सती पति के संग,
सिद्ध किया अपनी पतिव्रता धर्म सुलोचना।।

रचना- साधना (प्र०अ०)
कम्पोजिट स्कूल ढोढ़ियाही
तेलियानी, फतेहपुर

शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

रामायण के पात्र

28

महर्षि वाल्मीकि

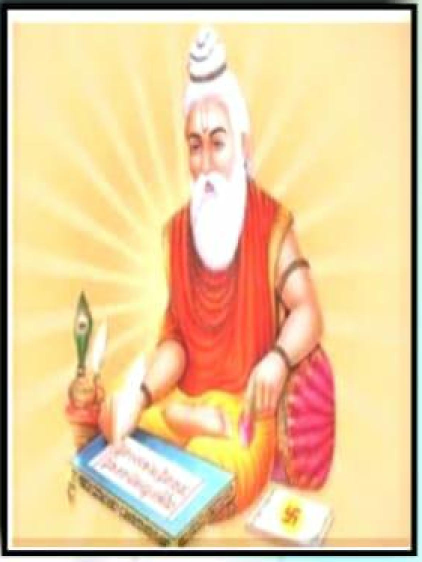

थे बड़े ज्ञानी केवट, महर्षि वाल्मीकि,
डाकू रत्नाकर से बने महर्षि वाल्मीकि।
लूटपाट के चक्कर में मुनि नारद को घेर लिया,
नारद मुनि ने सत्य दिखा उनको धन्य किया।।

चर्षणी हैं माता और वरुण पुत्र हैं वाल्मीकि,
ज्योतिष और खगोलविद्या के विद्वान वाल्मीकि।
13 अक्टूबर को हर साल वाल्मीकि जयन्ती मनाते हैं,
रामायण, रामचरित्र को गाकर प्रभु राम को मनाते हैं।।

कठोर तप, अनुष्ठान सिद्ध कर महर्षि का पद प्राप्त किया,
अश्विन मास की शरद पूर्णिमा को महर्षि ने जन्म लिया।
वैदिक काल में महान ऋषि, आदि कवि कहलाए,
संस्कृत में रची रामायण "वाल्मीकि रामायण" कहलाए।।

जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं का रामायण में ज्ञान दिया,
गृहस्थधर्म, राजधर्म और प्रजा धर्म का सचित्र वर्णन किया।
समय, सूर्य और चन्द्र आदि नक्षत्रों का बखान किया,
सतयुग, त्रेता, और द्वापर पर महर्षि ने राज किया।।

रचना
नीतू कुमारी (स०अ०)
प्रा० वि० सादातपुर नाचनी
इस्लामनगर, बदायूँ

रामायण के पात्र

29

गुरु वशिष्ठ

वैदिक काल में थे महर्षि वशिष्ठ,
राम के थे गुरु महर्षि वशिष्ठ।
सप्त ऋषियों में थे वह एक,
स्वभाव और प्रकृति से थे बहुत नेक ।।

राजा दशरथ के कुलगुरु थे,
ब्रह्मा जी के मानस पुत्र थे।
राम के व्यक्तित्व को निखारा था,
अपनी गुरु परम्परा को निभाया था ।।

इन्होंने ने देश की मेधा को इतना दिया,
देश ने उनको आकाश में स्थान दिया।
गुरुओं की कड़ी में उनका स्वर्णिम नाम,
सम्पूर्ण भारत देता है उनको सम्मान।।

वह थे एक महान तपस्वी
धैर्यवान, विनम्र और तेजस्वी।
विश्वामित्र के घमंड को किया चूर,
शक्ति और अहंकार को किया दूर ।।

रचना- इला सिंह (स०अ०)
उच्च प्रा०वि० पनेरुवा
अमौली, अमौली, फतेहपुर

रामायण के पात्र

30

विश्वामित्र

बड़े तेजस्वी थे विश्वामित्र ,
अर्थ है जिनका विश्व के मित्र।
विश्वामित्र के पिता थे गाधि,
वशिष्ठ ने दी ब्राह्मणत्व उपाधि।।

गौ पाने को युद्ध किया था,
त्रिशंकु को स्वर्ग दिया था।
गायत्री मंत्र रचित किया था,
धरती पर स्वर्गलोक दिया था।।

राम-लक्ष्मण संग वन में प्रस्थान,
शस्त्र कला का दिया था ज्ञान।
बक्सर में स्थित है आश्रम,
इसका नाम है सिद्धाश्रम।।

सौ पुत्रों के थे वह तात,
धनुर्विद्या में थे विख्यात।
मेनका ने की तपस्या भंग,
विवाह किया फिर उसके संग।।

रचना
फ़राह हारून"वफ़ा" (प्र०अ०)
प्रा० वि० मढ़ियाभांसी
सालारपुर, बदायूँ

रामायण के पात्र

31

लव-कुश

सूर्यवंश के तारे लव-कुश,
रघुवर के राज दुलारे लवकुश।
सूर्यवंश के थे उजियारे,
लव-कुश राजकुमार अति प्यारे।।

जन्में वाल्मीकि आश्रम में,
शूरवीर रणकौशल उनमें।
राजा हो कर रंक-सा जीवन,
धन, वैभव की न कोई कीमत।।

पालन-पोषण, शिक्षा-दीक्षा,
पूर्ण की हर कठिन परीक्षा।
रामायण सीता-राम कहानी,
लव-कुश को कंठस्थ करानी।।

अश्वमेध का घोड़ा पकड़ा,
उसको नहीं देने पर अटका।
युद्ध हुआ तब भीषण भारी,
हरा दिए सब वीर सिपाही।।

पिता को हुआ तब ये भान।
मेरे पुत्र हैं बड़े महान।।

रचना-
चंचल उपाध्याय (प्र०अ०)
प्रा० वि० कोट
बिसौली, बदायूँ

रामायण के पात्र

32

अहिल्या

ब्रह्मा जी की मानस पुत्री,
पुराणों में वर्णित सुन्दर स्त्री।
अहिल्या गौतम ऋषि की पत्नी,
श्वसुर थे उनके ऋषि अत्रि।।

इन्द्र आसक्त हो प्रेम पाने को,
ऋषि गौतम का रुप धर आया।
पतिनिष्ठा अहिल्या के मन भारी,
भ्रमवश श्राप दे ऋषि मन घबराया।।

विश्वामित्र राम, लक्ष्मण संग निकले,
मिथिला के वन-उपवन दिखाने।
निर्जन-वन में सिला देख राम ने पूछा,
गुरु विश्वामित्र कारण लगे बताने।।

सुन राम ने सिला को किया चरण-स्पर्श,
पत्थर की सिला बन गयी सुन्दर नारी।
ऋषि कोपभाजन, श्राप से मुक्त करके,
अहिल्या श्रीराम जी ने तारी।।

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

रचना- नैमिष शर्मा (स०अ०)
संवि० पूर्व मा० विद्यालय- तेहरा
विकास खण्ड व जनपद- मथुरा

रामायण के पात्र

33

शबरी

श्रवणा जिनका नाम था असली,
शबरी हुआ कालान्तर में नाम।
छोड़ विवाह, रोक पशुओं की बलि,
वन में किया जिन्होंने प्रस्थान।।

मतंग ऋषि के आश्रम में,
था सेवा ही जिनका काम।
निस्वार्थ सेवा से खुश हो ऋषि ने,
दिया राम-दर्शन का वरदान।।

राम-दर्शन की थी अभिलाषी,
चुन-चुन बेर वो वन से लाती।
एक दिवस प्रभु राम जब आये,
शबरी ने चख-चख बेर खिलाये।।

भक्ति देख प्रभु श्रीराम ने,
दिया श्री चरणों में स्थान।
दया, ममता और भक्ति से,
राम-भक्त बनी उनकी पहचान।।

रचना
नीतू सिंह (स०अ०)
उ० प्रा० वि० भुडेली
समरेर, बदायूँ

रामायण के पात्र

34

जटायु

रामायण में सबसे प्रचलित है,
राम-रावण संग्राम।
उसमें प्रचलित है,
अरुण के पुत्र जटायु का नाम।।

मित्रता में था राजा दशरथ,
और जटायु का नाम।
हुआ परिचय जब पंचवटी,
गए श्री राम।।

सीता हरण करने, जब रावण आया।
रक्षा को तब, जटायु ने दाँव लगाया।।

जटायु और रावण का,
तब हुआ भयंकर संग्राम।
पंखविहीन गिद्धराज,
धूमिल हुआ भूमि में अंजाम।।

जब-जब राम-सीता की,
कथा चलेगी।
तब तक जटायु की कीर्ति,
जग में रहेगी।।

रचना- रेनू (स०अ०)
प्रा० वि० कूँड़ी
बड़ागाँव, वाराणसी

रामायण के पात्र

35

सूर्पनखा

नाम सूर्पनखा था जिसका,
लंकापति थे जिसके भाई।
वनवास अवधि में वन में,
सूर्पनखा को भाए रघुराई।।

प्रेम प्रस्ताव लेकर तत्क्षण,
निकट प्रभु के वह आयी।
ठुकरा प्रस्ताव पहुँचाया समीप,
लखन के देखो प्रभु की चतुराई।।

न सुनकर लक्ष्मण के मुख से,
भृकुटि विकराल कर क्रोध में आयी।
एक गलती के कारण ही उसने,
अपनी मान और गरिमा गवायी।।

वासनान्ध दुश्चरित्रा सूर्पनखा ने,
सीता वध का लिया ठान।
रामाज्ञा पर तुरत लक्ष्मण ने,
काट लिए नाक और कान।।

यहीं से बीज अंकुरित हुए युद्ध के,
रावण ने बहन का बदला लेने की ठानी।
प्रारम्भ हो गयी यहाँ से,
लंकापति के सर्वनाश की कहानी।।

रचना-
रीनू पाल "रूह"
प्रा० वि० दिलावलपुर
देवमई, फतेहपुर

रामायण के पात्र

36

मंथरा

कोई कहे उसे गन्धर्व कन्या,
कोई कहे उसे कैकयी दासी।
कोई कहे उसे इन्द्र अप्सरा,
थी वो कैकय देश की वासी।।

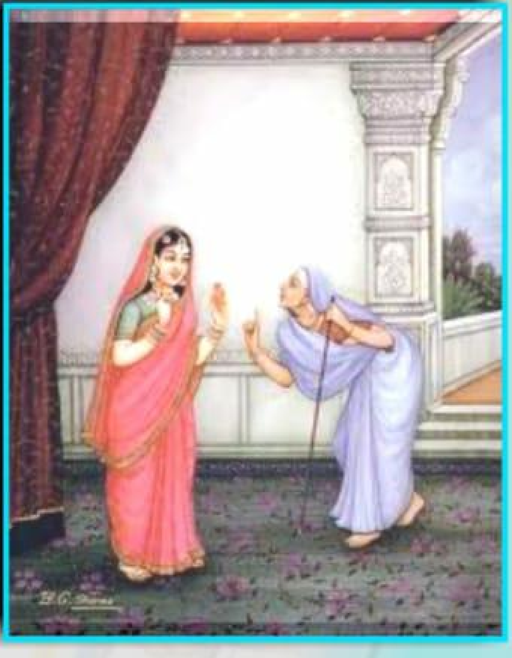

जब सुना ये राज्य समाचार उसने,
दशरथ ने राम को राज्य सौंप दिया।
आकर तुरन्त जो उसने कैकयी को,
सुना समाचार ऐसे व्यक्त किया।।

कर अभिलाषा उसने कैकयी से,
भगवान राम को वनवास मिले।
माँग लिए वरदान दशरथ से जब,
उनकी प्रियतम रानी कैकयी ने।।

हो चौदह वर्ष वनवास राम को,
ये दुःख उनसे ना सहन हुआ।
हुए परलोकी राजा दशरथ जब,
भगवान राम को वनवास हुआ।।

रचना
रजत कमल वार्ष्णेय (स०अ०)
प्रा० वि० ख़ंजनपुर
इस्लामनगर, बदायूँ

मिशन शिक्षण संवाद

रामायण के पात्र

रचनाकारों की सूची

01- हेमलता गुप्ता, अलीगढ़
02- दीपिका जैन, बदायूँ
03- शिखा वर्मा, सीतापुर
04- सुप्रिया सिंह सीतापुर
05- पूनम गुप्ता, अलीगढ़
06- रीना कुमारी, बागपत
07- नम्रता श्रीवास्तव (बांदा)
08- जितेन्द्र कुमार, बागपत
09- मन्जू शर्मा, हाथरस
10- भुवन प्रकाश, सीतापुर
11- डॉ० अनिता मुद्गल, मथुरा
12- प्रतिमा उमराव, फतेहपुर
13- अनुपम वर्मा, बाराबंकी
14- अनुप्रिया यादव फतेहपुर
15- स्मृति परमार, बदायूँ
16- रीना रानी, बागपत
17- सतीश चंद्र, सीतापुर
18- सुमन पांडेय, फ़तेहपुर
19- अंजली मिश्रा, फतेहपुर
20- सीमा मिश्रा फतेहपुर
21- ब्रजराज सारस्वत मथुरा
22- गुलफ्शां, फ़तेहपुर
23- आकांक्षा मिश्रा,हरदोई
24- शहनाज़ बानो, चित्रकूट
25- सुधांशु श्रीवास्तव, फ़तेहपुर
26- ज्योति सागर, बागपत
27- साधना फतेहपुर
28- नीतू कुमारी, बदायूँ
29- इला सिंह, फतेहपुर
30- फराह हारून, बदायूँ
31- चचंल उपाध्याय,बदायूँ
32- नैमिष शर्मा, मथुरा
33- नीतू सिंह, बदायूँ
34- रेनू, वाराणसी
35- रीनू पाल, फ़तेहपुर
36- रजत कमल वार्ष्णेय, बदायूँ

तकनीकी सहयोग
आयुषी अग्रवाल, मुरादाबाद
मार्गदर्शन:- राज कुमार शर्मा, चित्रकूट

संकलन:- मिशन शिक्षण संवाद